शोध सारांश

साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय|

सार सार को गहि रहै थोथो देई उडाय||

अर्थ¬:- इस संसार में ऐसे सज्जनों की जरूरत है जैसे अनाज साफ करने वाला सूप होता है| जो सार्थक को बचा लेंगे और निरर्थक को उड़ा देंगे|

वर्तमान समय में मानवता की रक्षा के लिए समाज में ऐसे ऋषि, मुनि, महर्षि, महात्मा, संतो की आवश्यकता है जो सूप की तरह व्यवहार कर इस समाज को निर्मल कर दे| बुराइयों का नाश करें और अच्छाइयों का प्रचार प्रसार करें|तभी मानवता मूल रूप में व्याप्त हो पाएगी|

इसी संदर्भ में मानवता पर मेरे कुछ विचार है दया के पावन भाव से मानवता का श्रृंगार किया जाए क्रोध कामवासनाओं की भावनाओं को विराम दिया जाये| दया प्रेम करुणा त्याग परोपकार आदि नैतिक मूल्यों को जीवन के प्रारंभिक अवस्था (बाल्यावस्था)से ही पोषित व संचित किया जाये|

Scanned with OKEN Scanner